मनसा सेवा - 76

अव्यक्त बापदादा :- (30/03/1999)

➳ _ ➳ तो पहली सेवा इस वर्ष - महान दाता की करो। आप दाता द्वारा मिला हुआ देते हो। ब्राह्मण कोई भिखारी नहीं हैं लेकिन सहयोगी हैं। तो आपस में ब्राह्मणों को एक दो में दान नहीं देना है, सहयोग देना है। यह है पहला नम्बर सेवा।

➳ _ ➳ और साथ-साथ बापदादा ने विदेश के बच्चों की खुशखबरी सुनी तो बापदादा ने देखा कि जो इस सृष्टि के आवाज फैलाने के निमित बापदादा ने जो माइक नाम दिया है तो विदेश के बच्चों ने आपस में इस कार्य को किया है और जब प्लैन बना है तो प्रैक्टिकल होना ही है।

➳ _ ➳ लेकिन भारत में भी जो 13 ज़ोन हैं, हर एक ज़ोन से कम से कम एक ऐसा विशेष निमित सेवाधारी बनें, जिसको माइक कहो या कुछ भी कहो, आवाज फैलाने वाले कोई निमित्त बनाओ, यह बापदादा ने कम से कम कहा है लेकिन अगर बड़े-बड़े देश में ऐसे निमित बनने वाले हैं तो सिर्फ ज़ोन वाले नहीं लेकिन बड़े देशों से भी ऐसे तैयार कर प्रोग्राम बनाना है।

➳ _ ➳ बापदादा ने विदेश के बच्चों को दिल ही दिल में मुबारक दी, अभी मुख से भी दे रहे हैं कि प्रैक्टिकल में लाने का प्लैन पहले बापदादा के सामने लाया। वैसे बापदादा जानते हैं कि भारत में और ही सहज है लेकिन अभी कुछ क्वालिटी की सेवा कर सहयोगी समीप लाओ। बहुत सहयोगी हैं लेकिन संगठन में उन्हों को और समीप लाओ।

➢➢ **<u>पहली न. सेवा है सहयोग</u>**

➳ _ ➳ जो भी सम्बंध सम्पर्क मे आए खाली न जाए कुछ न कुछ लेकर जाए

➳ _ ➳ खजानो से भरपूर होकर सदा दो

➳ _ ➳ ब्राह्मण को एक दो को आपस मे दान नही देना सहयोग देना

→ ब्राह्मण एक दो को भीख नही देते

- परंतु क्या वास्तव मे एक ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मण से मांगता नही है??
- क्या किसी भीख की कामना अंदर नही रहती??

➳ _ ➳ ऐसी वो कौन सी बाते है जहां हम भिखारी बन जाते है

➳ _ ➳ ऐसी कौन सी बाते है जो हमे एक भिक्षुक भिखारी एक याचक बना देती है

→ ऐसी कुछ बातें जहां ब्राह्मण न चाहते हुए भी भिखारी बन जाता है जबकि दाता एक है सब उससे लो

- पर कुछ बाते ऐसी है जो हम दूसरो से मांगते है अपेक्षाएं करते है कामना करते है वो पूरी नही होती तो दुखी हो जाते है।

➳ _ ➳ **<u>भीख मांगते मांगते मांगने की आदत पड जाती है और देने को कभी राजी नही होता</u>**

→ लेना ही संस्कार बन जाता है

→ जहां न चाहते हुए भी मांगता ही है

➳ _ ➳ **वह ब्राह्मण जिन्होने परमात्म को पा लिया या परम दाता से जिनकी झोलियां भर गई है परमात्म प्रेम से भर गई है तो वो भी भीख मांगते है**

➢➢ ऐसी कुछ चीजे जिनकी ब्राह्मण भीख मांगते हैं

➳ _ ➳ प्रेम

→ प्रेम की कामना

→ दूसरा मेरे से प्यार से बात करे

→ प्रेम से व्यवहार करे प्यार दे

- कोई प्यार से बात नही करता तो दुखी होता है।

→ प्यार जैसे मूलभूत आवश्यकता है मनुष्य की

- अगर नही मिलता तो दुखी होता है

➳ _ ➳ परंतु क्या वो ये भूलता है ये प्यार जो परमात्मा से मिल रहा है वो मनुष्यो की तुलना मे क्या है ??

→ वो चाहे संसार के मनुष्य हो या ब्राह्मण हो हमे भीख नही मांगनी है

➳ _ ➳ **जब परमात्मा प्यार से झोलियां भर गई है तो किसी और के प्यार की क्या आवश्यकता है??**

➳ _ ➳ रिस्पेक्ट

→ मुझे दूसरे रिस्पेक्ट दे

- अगर अंदर में ये भाव है तो स्वमान का अभाव है

→ हमे किसी का मान सम्मान आदर क्यूं चाहिये

- स्व को भूल जाते हैं
- आत्मिक स्थिति को भूल जाते है
- खजानो को भूल जाते है
- भाग्य को भूल जाते इसलिए रिस्पेक्ट चाहिए

➳ _ ➳ **इस संगमयुग पर स्वयं भगवान रिस्पेक्ट दे रहा है कितने ऊंचे ऊंचे टाइटल दे रहा है!!**

➳ _ ➳ केयर

→ केयर अर्थात देखरेख

→ दूसरे हमारी केयर करे

→ हमारी तरफ ध्यान दे

➳ _ ➳ अटेंशन

→ **अटेंशन अर्थात किसी particular चीज की तरफ अटेशन देना**

→ कोई हमारी तरफ विशेष अटेशन दे।

➳ _ ➳ स्तुति

→ इसका बेगर नही बनना है कोई हमारी स्तुति करे

→ हमारी प्रशंसा करे

→ इस संसार मे नाम मिले

- ये इच्छा कहां से कहां ले जाती है ।

➳ _ ➳ पावर

→ हमारे लिए सकाश दे दो

→ हमारे लिए योग कर दो

- **हमारे जीवन मे कभी ऐसी बारी न आ जाए कि किसी और को कहना पडे कि हमारे जीवन मे समस्या बहुत है थोडा सकाश दो**

- बीमारी है थोडी सी सकाश दो हमारे लिए योग करो

➳ _ ➳ सहानुभूति

→ हमारी स्थिति देखकर दूसरे हमदर्दी करे

→ तुम्हारे साथ तो बहुत अन्याय हुआ है

- यहां पर भी अन्याय

➳ _ ➳ सुख और शांति

→ **जीवन मे सुखो का सागर मिला है**

→ शांति का सागर मिला है

- और दूसरो से कामना है सुख की शांति की
- क्या दूसरा हमे सुख दे सकता है शांति दे सकता है?? नहीं

➳ _ ➳ वस्तु

→ हमे किसी वस्तु की भीख नही चाहिए

- न तो वो खाने की वस्तु न ही पहनने की वस्तु न साधन कोई सामग्री किसी से कुछ नही चाहिए

➳ _ ➳ सेवा मे मदद

→ **जो सेवा हम अकेले कर सकते है उसमे मदद मांगना**

- न मिलने पर दुखी होना
- और फिर उसका विस्तार करना उसको फैलाना

➳ _ ➳ आधार

→ आधार चाहिए स्पोर्ट चाहिए मिल जाए तो बहुत अच्छा

- **इधर बैठा है हजार भुजा वाला देने के लिए परंतु साकार स्पोर्ट चाहिए**

→ दो भुजा वाले का स्पोर्ट थोडा ज्यादा मजबूत है प्रेक्टिकल मे दिखाई देता है

➳ _ ➳ समझना

→ दूसरे मुझे समझे समझते ही नही मुझे

→ ऐसे ही आ गए क्या हम यहां त्याग तो देखो

→ कितनी मेहनत करते है तुमने अब तक मुझे समझा नही

→ किसी ने मुझे पहचाना नही कोई वैल्यू ही नही

→ जब शरीर छोड दूंगा तो पता चलेगा हमारी कितनी वैल्यू है

→ क्या क्या कर के गए तब पता चलेगा कि कितनी सेवायें कर के गए।